अध्याय - 6

उपसंहार

6.0 उपसंहार

शोध प्रबंध में खड़ीबोली हिंदी के आरंभ से लेकर समकालीन संदर्भ तक के काव्येतिहास में अंकित प्रमुख एवं कतिपय स्त्री प्रकरणों के आधार पर यह देखने का प्रयास किया गया कि उसमें स्त्रीत्व संबन्धी धारणाएँ कितनी बदली मिलती हैं। सामान्य दृष्टि से ही पूरा प्रसंग सकारात्मक और प्रेरणादायक रहा था। भारतीय स्त्री के विकास के विभिन्न चरणों का काव्येतिहास की विविध दशाओं को तारतम्य में लाने का यह प्रयास इसलिए सकारात्मक और प्रेरणावर्द्धक रहा है कि इसमें स्त्री रूपी इंसानी व्यक्तित्व की सामाजिक प्रगति की विकासयात्रा का परिचय प्राप्त हुआ। अपने इतिहास के साथ, यह समाज व संस्कृति तथा समय व राष्ट्र के इतिहास को भी देखने का अवसर रहा था।

प्रथम अध्याय ऐतिहासिक दृष्टि से विषय की पृष्ठभूमि आंकने का प्रयास है। इसमें सामाजिक परिवर्तन के लिए स्त्री जागरण की अनिवार्यता, आज़ादी की लड़ाई, स्त्री शिक्षा, अंधविश्वासों से लडाई, स्त्रियों का सामाजिक दखल, विविध दशाएँ तथा भारतीय स्त्री जागरण के विकास के विभिन्न परिप्रेक्ष्य पर चर्चा की है।

इस अध्याय के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि हिंदी काव्य में जागरण का संदर्भ पाश्चात्य आधुनिकता से विभिन्न है, पर वह उसके प्रभावों से पूर्णतः दूर नहीं है।

भारत में सामाजिक विकास, राष्ट्रीय जागरण आदि से जुडकर स्त्री जागृति हुई है जिसको आगे बढ़ाने में यहाँ की स्त्रियों से बढ़कर, आरंभकाल में पुरुषों ने कार्य किया था। पिछली सदी के आरंभ में, देश में जो जागृति का सामाजिक परिप्रेक्ष्य उभरा, उसमें स्त्रियाँ सहित सभी जनविभागों के उन्नमन के लिए जगह मिली थी। पत्र पत्रिकाओं के साथ साहित्य ने भी इसके लिए चाह दिखाई थी। अलगावबोध बिना भारतीय स्त्रियाँ, यहाँ के राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाओं में भाग लेती थीं और यह परंपरा तीसरी दुनिया की स्त्रियों की संगठनात्मकता को अलग रखती है। आज भी भारत में नारीवादी संगठनों की परंपरा मज़बूत नहीं है। चिन्तन मनन और विचारधारा के स्तर पर नारीवादी एवं स्त्रीपक्षी लोग भारत भर में मौजूद है। अतः राजनीति, समाज, राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ती के नाम पर कार्य करनेवाले संगठन आदि के कार्यों में स्त्रियाँ भाग लेती हैं, और स्त्रीत्व का योगदान दर्ज करती हैं।

हिंदी सहित भारतीय भाषा साहित्य में, स्त्रीत्व के प्रकाशन की चर्चा भारतीय इतिहास की परिघटनाओं के साथ ही की जा सकती है। सामाजिक विकास एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों के अनुसार स्त्रीत्व की झाँकियों का पुनरुज्जीवन एवं पुर्ननिर्माण के अवसर प्राप्त होते हैं, इनका उपयोग कवियों व कवयित्रियों ने किया है। पिछली शती के अंतिम तीन दशकों तक कवयित्रियों की संख्या हिंदी में कम ही वर्तमान रही थी, जिससे स्त्री की दुनिया का अध्ययन कवियों की कविताओं से ही आंकना पडता है। एकाध उदाहरणों व प्रच्छन्न स्त्री कथनों के माध्यम से उस समय के स्त्री हस्ताक्षेपों को आंका है।

आधुनिक हिंदी कविता में स्त्रीत्व के विभिन्न चरण ढूँढ सकते हैं। सुविधा के लिए भारतीय आधुनिकता को यहाँ पर नवजागरण के अर्थ में लिया है। इस शोध प्रबंध में इस संबंधी स्पष्टीकरण है। भारतेंदु, द्विवेदी, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, छायावादी, प्रगतिवादी, नई तथा समकालीन कविता की श्रेणीबद्धता में चित्रित स्त्री की विविध छवियों पर यहाँ पर चर्चा है। स्त्रीत्व के अंकन में कवियों ने भी काम किया है, इसमें उन्हें भी प्रश्रय दिया है। सामाजिकता और स्त्रीत्व का जुडाव इस अध्ययन से स्पष्ट होता है। स्त्री की मुक्ति और जागरण सामाजिक विकास की दशा का भी संकेत करता है।

आगे के अध्याय में समकालीन काव्य परिसर की स्त्री संबंधी प्रवृत्तियों का अंकन है। स्त्री के उन्नमन, जागरण तथा सबलीकरण को ध्यान में रखकर कविताएँ लिखने का यह समय है। इसलिए पूर्ववर्ती युगों से बढकर इसमें कवयित्रियों का दखल है। विषयों में विशेषता है, स्त्री स्वरों में ध्यान व स्पष्टता है। स्त्री के स्वायत्त होने की जानकारी देनेवाली कविताएँ भी इनमें शामिल हैं। स्त्री वर्ग दृष्टि, देह मुक्ति, दलित अस्मितावाली आदि पर समकालीन कवि या कवयित्रियों ने जो काव्य प्रयास किया, उन्हें देखने व अंकित रखने का भी प्रयास किया है। स्त्री आवाज़ की विकासशील काव्य यात्रा को यह अध्याय स्पष्ट करता है।

बीसवीं सदी के अंतिम तीन दशकों से हिंदी में स्त्री कविता की स्पष्ट एवं अटूट काव्ययात्रा सज्जित होती है। पूर्ववर्ती युगों की कविता तथा पुरुष

कवियों से अलग होकर कवयित्रियों ने काम किया और सशक्त, विचारवान एवं महत्वपूर्ण कविताओं का परिचय दिया। यह स्त्रीत्व की विभिन्न छवियों का भी महत्वपूर्ण एवं सुवर्ण समय है।

चौथा अध्याय 'कविता का वैचारिक विमर्श एवं भारतीय स्त्रीत्व की स्थापना' में स्त्री अध्ययन की सैद्धांतिकी के संदर्भ में कविता में चित्रित स्त्रीत्व की विविध झांकियों व छवियों का प्रतिपादन है। पिछली सदी के उत्तरार्द्ध में, स्पष्ट कहें तो उसके अंतिम दशकों में स्त्रीत्व को लेकर भारतीय कविता ने अभूतपूर्व सजगता दिखाई है और स्त्रीत्व की स्थापना में अपनी खास भूमिका निभाई है। पाश्चात्य तथा भारतीय संदर्भ में स्त्री वैचारिकी को देखने का प्रयास किया है। इस वैचारिकी का प्रभाव पूरे समाज और संस्कृति में दिखायमान है। कविता ने भी मातृत्व, गृहस्थी निभानेवाली पढ़ी–लिखी या कामकाजी महिला, मज़दूरिन और आदिवासी, मुक्त स्त्री, दलित स्त्री, वेश्या आदि सभी स्त्री अस्मिताओं को विषय बनाया है। इस शती के आरंभ तक नव युगीन समस्याओं के आगे खडी स्त्री का प्रतिपादन भी मिलता है। उग्रवादी चिंतनों से लेकर उत्तर नारीवादी विमर्श तक की वैचारिकी का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव समकालीन कविता में द्रष्टव्य है। विविध राष्ट्रों या प्रदेशों पर होनेवाले स्त्री उत्पीडनों, छेडछाडों की खबरें तेज़ी से फैलनेवाले युग में स्त्री पक्ष की कविता का भी वैश्विक परिप्रेक्ष्य तय ही जाता है।

अध्याय पाँच भाषा शैली पर केन्द्रित है। पाँचवाँ अध्याय, 'आधुनिक काव्य भाषा एवं भाषा का जागरण' में नवजागरण से लेकर खड़ीबोली काव्य में

हुए भाषा परिवर्तन और विषय शैली विकास को देखने का प्रयास है। आरंभिक स्त्री विषयक कविताएँ कवियों ने लिखी थीं। आगे कवयित्रियों की तादाद बढ़ती नज़र आती है। हिंदी में इनकी भाषा शैली की अलग धारा चर्चित है। पुंसवाद में उपयुक्त स्त्री विरोधी उक्तियों, शब्दों व गालियों पर खूब चर्चा होती है, उसके परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिंदी काव्य पंक्तियों में उपलब्ध स्त्री विरोध की पहचान भी होती है। कवियों व कवयित्रियों की भाषा–शब्द–शैली चयन में जो अंतर है, उस पर विस्तार से देखने का प्रयास इसमें हैं। यहाँ पर सूचनात्मक अध्ययन किया गया है कि स्त्री व पुरुष की काव्याभिव्यक्तियों में भी यदा–कदा अंतर विद्यमान है, जो स्त्री के कचोटते लिंगभेद के अलग अनुभव का बखान करता है। स्त्री अनुभवों की अलग काव्य भाषा पर चिंतन का प्रयास इस अध्याय का महत्व है।

संचित दृष्टि से माँ पर अभिभूतता, पत्नी पर सहानुभूति, प्रेमिका पर सहचिंतन आदि पुरुष कवियों का इष्ट विषय है, तो लिंग भेदवाली सामाजिक व्यवस्था पर शंका और विरोध, उसके कचोटते अनुभवों का वैयक्तिक प्रतिपादन, इंसान बनने और रहने की आकांक्षा, अंदरूनी सच्चाई का खुलासा, युगानुरूप आत्म विमर्श, आन्दोलनात्मकता की दृष्टि आदि कवयित्रियों की अभिव्यंजना की विशेषताएँ हैं। समकालीन कवियों में कई नारी को साथिन मानने को तैयार है और स्त्री की सामाजिक भूमिका दर्ज करने को तैयार है। सामाजिक एवं लिंगभेद संबंधी जागरूकता स्त्री संबंधी कविताओं की सामान्य विशेषता है। स्त्री पक्ष की कविता इस जागरूकता को हर विषय व संदर्भ, काल व समय, राष्ट्र व प्रांत के साथ जोड कर अपनी खास पहचान छोडती है।

पिछली शती में भारतीय स्त्रियों ने अपनी स्वपहचान की सही छाप छोडी है। इसका प्रमाण हिंदी में लिखी गई कविताओं द्वारा दिया जा सकता है। चहार दिवारी में पली औरत की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक छाया के विविध पडाव और सकारात्मक रूप हिंदी कविता में स्पष्ट नज़र आते हैं जो आगे की पीढ़ी के लिए प्रेरणा एवं स्फूर्ति प्रदान करते हैं। यह प्रेरणा एवं स्फूर्ति उन्हें नई चुनौतियों से लडने की ताकत देती है। यह हिंदी की काव्ययात्रा के इस अध्ययन से प्राप्त सकारात्मक चिंतन है।

विषयवस्तु की दृष्टि से स्त्रीत्व की सचेतना, सकारात्मकता, आंदोलनधर्मिता तथा सामाजिक भागीदारी पर कविताओं में बढती हुई संकेत प्राप्त होता है, तो भाषिक शैली में कविताएँ ज़्यादा प्रयोगधर्मी बनती जाती हैं। विविध परीक्षणों निरीक्षणों के बल पर वे बदलते स्त्री व्यक्तित्व को पहचान देने का प्रयास करती हैं। पुराने प्रतिमानों को हटाकर नए सामाजिक एवं राजनीतिक उदाहरण आगे रखने में स्त्री कविता एवं स्त्री पक्ष की कविता सफल दिखती है। आगे भी सामाजिक स्त्रीत्व के इंसानी जीवन संघर्ष के साथ हिंदी कविता की यात्रा तय है, इसमें कोई शंका नहीं है।